



राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत का 93वाँ वार्षिक सत्र



राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी



भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (नासी), प्रयागराज

एवं

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बार्क), मुम्बई

के संयुक्त तत्वाधान में

'इंडिया सिक्वोर @75' आयोजित

93वाँ वार्षिक सत्र एवं संगोष्ठी में भाग लेने हेतु आप सादर आमंत्रित हैं।

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (नासी) – एक संक्षिप्त विवरण

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (नासी), भारतवर्ष की प्रथम विज्ञान अकादमी है, जिसकी स्थापना प्रो० मेघनाद साहा द्वारा सन् 1930 में की गई थी। प्रो० मेघनाद साहा एक महान भौतिक विज्ञानी, दूरदर्शी, समाज सुधारक एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिकी के तत्कालीन प्रोफेसर थे, जो मानते थे कि भारत जैसे देश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के हस्तक्षेप के माध्यम से समस्याओं का समाधान किया जा सकता है; इसके लिए समाज की समस्याओं एवं समाधानों को पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कर समाज के शिक्षित/वैज्ञानिक वर्ग तक पहुँचाया जाना चाहिए। उक्त कार्य की पूर्ति हेतु प्रो० साहा ने भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा अपने शोध प्रकाशित करने, देश की समस्याओं पर चर्चा करने तथा उनका वैज्ञानिक समाधान खोजने के लिए एक मंच की स्थापना पर विचार किया। प्रो० साहा के इस विचार को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एक पत्रिका के दिसंबर (1929) के अंक में 'ए प्ली फॉर एन एकेडमी ऑफ साइंसेज' शीर्षक के अन्तर्गत एक लेख के रूप में प्रकाशित किया गया, जिसे देश भर के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकृत एवं सराहा गया। वर्ष 1930 में अकादमी इस देश की प्रथम विज्ञान अकादमी के रूप में अस्तित्व में आई जिसके संस्थापक अध्यक्ष, प्रो० साहा थे।

उद्घाटन सत्र में बोलते हुए प्रो० साहा ने कहा, "एक विज्ञान अकादमी समाज को शिक्षित कर उसकी विशेष समस्याओं पर कार्य कर सकती है साथ ही वैज्ञानिक चर्चा एवं सहयोगात्मक अनुसंधान हेतु विभिन्न वैज्ञानिकों को एक मंच पर ला सकती है, परन्तु अकादमी का मुख्य कार्य मानव ज्ञान में योगदान के माध्यम द्वारा 'सांस्कृतिक सुधार' होना चाहिए"।

अतः अकादमी को इसके संस्थापक द्वारा 'विज्ञान एवं समाज' का जनादेश मिला जिसे अकादमी द्वारा अपने विभिन्न वैज्ञानिक कार्यक्रमों के माध्यम से कुशलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा है। वर्तमान में कार्यक्रमों का संचालन, अकादमी के अध्यक्ष प्रो० बलराम भागवत (भारत, सरकार के पूर्व सचिव एवं वर्तमान में एम्स दिल्ली में कार्यरत) द्वारा किया जा रहा है। भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० एम०एस० स्वामीनाथन, प्रो० पी०एन० टंडन प्रो० मंतू शर्मा, प्रो० अशोक मिश्रा, प्रो० आसीस दत्ता, प्रो० अनिल काकोडकर, प्रो० जी पद्मनाबन, एवं प्रो० अजय घटक विज्ञान, विशेषकर, अकादमी के विकास में गहरी रुचि ले रहे हैं। अन्य भूतपूर्व अध्यक्षों जैसे स्वर्गीय एम०जी०के मेनन, प्रो० ए०के शर्मा प्रो० एस०के जोशी प्रो० यू एस श्रीवास्तव एवं प्रो० वी०पी० शर्मा ने भी अकादमी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अकादमी द्वारा विभिन्न माध्यमों के जरिए देश भर में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रचार होता है जैसे—

- 1- दो त्रैमासिक वैज्ञानिक पत्रिकाओं (प्रोसीडिंग्स ऑफ नासी खंड 'ए' फिजिकल साइंसेज एवं खंड 'बी' बायोलॉजिकल साइंसेज) एवं एक द्विमासिक पत्रिका (राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी साइंस लेटर्स) का प्रकाशन।
- 2- प्रतिवर्ष, वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक संस्थान में वार्षिक सत्र एवं संगोष्ठी का आयोजन
- 3- वर्तमान राष्ट्रीय एवं वैज्ञानिक हित से संबंधित विषयों पर संगोष्ठियों, सेमिनारों एवं कार्यशालाओं का आयोजन।
- 4- विज्ञान विस्तार व्याख्यान, राज्यस्तरीय विज्ञान प्रतियोगिताओं जैसे वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी, भाषण, प्रदर्शनी, निबन्ध आदि विज्ञान संचार कार्यक्रमों की योजना एवं कार्यान्वयन, शिक्षक कार्यशालाएं, ग्रीष्मकालीन शीतकालीन स्कूल व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, राष्ट्रीय स्तर की वैज्ञानिक रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, राष्ट्रीय गणित दिवस एवं विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन।

- 5- वैज्ञानिकों के महत्वपूर्ण योगदान हेतु उन्हें फेलोशिप/सदस्यता तथा विभिन्न पुरस्कार जैसे नासी रिलायंस, नासी स्कोपस, एवं नासी युवा वैज्ञानिक पुरस्कारों से सम्मानित करना (2022 तक)।
- 6- प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों को सम्मानित करने के लिए महत्वपूर्ण रिसर्च फेलोशिप/वरिष्ठ वैज्ञानिक फेलोशिप आदि की स्थापना।
- 7- सम्पूर्ण देश में महिला शोधकर्ताओं/वैज्ञानिकों के लिए महिलाओं के तकनीकी सशक्तिकरण पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन।
- 8- 'सुरक्षित जल' परियोजना का संचालन/आयोजन।
- 9- अन्य परियोजनाओं/कार्यक्रमों जैसे पोषण, 'कोविड उपयुक्त व्यवहार' अपनाने हेतु जागरूकता कार्यक्रम, उद्यमिता विकास कार्यक्रम, नासी आई0सी0ए0आर व नासी आई0सी0एम0आर के संयुक्त कार्यक्रम
- 10- विभिन्न रिवर गैलरियों (दीर्घाओं) की स्थापना।
- 11- ग्रामीण आदिवासी कल्याण कार्यक्रम का आयोजन।

उपर्युक्त गतिविधियों के अतिरिक्त, अकादमी द्वारा वर्ष पर्यन्त दो अन्य विज्ञान अकादमियों आई.एन.एस.ए एवं आई.ए.एस.सी के संयुक्त तत्वाधान में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। सन् 2000 से अकादमी के वार्षिक सत्र विभिन्न स्थानों जैसे पुणे, शिलॉंग, अहमदाबाद, जयपुर, त्रिवेन्द्रम, वाराणसी, गोआ, जोधपुर, भुवनेश्वर, देहरादून, चित्रकूट, हैदराबाद एवं प्रयागराज में आयोजित किए गये हैं, जिनके माध्यम से देश के विभिन्न भागों के प्रतिष्ठित संस्थानों/विभागों से आमंत्रित वैज्ञानिक अपने शोध कार्य को प्रस्तुत करने के साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हैं। अकादमी के 22 चैप्टर देश के विभिन्न क्षेत्रों/राज्यों में स्थित अपने आस-पास के क्षेत्रों में वैज्ञानिक गतिविधियों के आयोजन के माध्यम से अकादमी के जनादेश 'विज्ञान एवं समाज' का क्रियान्वयन कर रहे हैं।

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बार्क) – एक संक्षिप्त विवरण

भारत एकमात्र विकासशील देश है, जिसने परमाणु रिएक्टरों को बिजली उत्पादन हेतु स्वदेशी रूप से विकसित, प्रदर्शित एवं तैनात किया है। यह मुख्य रूप से बार्क द्वारा व्यापक पैमाने पर कई दशकों के वैज्ञानिक अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास के माध्यम से संभव हो सका, जिसके संस्थापक डॉ० होमी भाभा थे। भारत देश में उपलब्ध परमाणु अयस्कों में लगभग 78,000 टन युरेनियम एवं 518,000 टन थोरियम धातु निकाली जा सकती है। यदि संपूर्ण युरेनियम संसाधनों का उपयोग पहले प्राकृतिक युरेनियम ईंधन वाले दबावयुक्त भारी जल रिएक्टरों (पी.एच.डब्ल्यू.आर) में किया जाता है, तो अनुमानतः लगभग 420 गीगावाट वर्ष बिजली का उत्पादन किया जा सकता है। परिणामी (घटे हुए) युरेनियम तथा इन PHWRS से अलग किए हुए प्लूटोनियम को यदि फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों (FBRs) में उपयोग किया जाए, तो अतिरिक्त 54,000GWe-यस बिजली का उत्पादन किया जा सकता है। इन फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों में थोरियम एसेंबलियों को कम शक्ति वाले जोन में लोड करके युरेनियम-233(U-233)का उत्पादन भी संभव है। इस प्रकार Th-U233 ईंधन वाले ब्रीडर रिएक्टरों की पीढ़ियों में परिवर्तन कर भारतवर्ष अतिरिक्त 358,000GWe-yrs बिजली का उत्पादन कर सकता है।

इस प्रकार 500-600 गीगावाट की (स्थापित) परमाणु ऊर्जा क्षमता पर देश के कोयला भंडार के समाप्त (विलुप्त) होने पर भी परमाणु संसाधनों द्वारा विद्युत उत्पादन संभव है।

वर्ष 2008 के दौरान, नागरिक सहयोग समझौते में सम्मिलित होने के बाद, भारत वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा परमाणु रिएक्टरों को स्थापित करने का अवसर मिला। इस संधि (समझौते) द्वारा भारतीय ऊर्जा पावर प्लाट (एन.पी.पी.) के लिए ईंधन आपूर्ति सुनिश्चित की गई। बार्क तीब्र (त्वरित) क्षमता निर्माण हेतु स्थानीय स्वदेशी रूप से दबावयुक्त वाटर रिएक्टर (PWR) विकसित करने की योजना बना रहा है।

बार्क ने स्वदेशी (PWR) कार्यक्रम को प्रारंभ करने के लिए प्रेशर वेसल, रिएक्टिविटी झाइव आदि के लिए फोर्जिंग तकनीक हासिल कर ली है।

भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तीसरे चरण के अर्न्तगत भारतीय मोल्टन सॉल्ट ब्रीडर रिएक्टर (IMSBR) एक महत्वपूर्ण तकनीक है। IMSBRमें प्रयुक्त ईंधन एक पिघले हुए प्लोरॉराईड साल्ट के रूप में उपलब्ध होता है, जो सुपर क्रिटिकल CO₂ आधारित ब्रेटन साइकल (SCBC) में ऊष्मा के स्थानान्तरण हेतु हीट एक्सचेंजर के माध्यम से बहता है, ताकि अधिक ऊर्जा रूपांतरण अनुपात प्राप्त हो सके।

अतः IMSBR तकनीक को 233U-Thईंधन चक्र में स्वतन्त्र रूप से प्रयोग में लाया जा सकता है।

इन रिएक्टरों के लिए कई प्रौद्योगिकी विकसित करने की आवश्यकता है, जो बार्क द्वारा की जा रही है इसमें 7Li संवर्धन, नमक का निर्माण एवं शुद्धिकरण, नमक का रसायन विज्ञान, संरचनात्मक सामग्री विकास, परमाणु ग्रेड ग्रफाइट विकास, कॉम्पोनेन्ट विकास, SCBC एवं IMSBR हेतु पुनर्प्रसंस्रण शामिल है। इसमें अतिरिक्त 5 मेगावाट के IMSBR की सभी प्रमुख प्रणालियों के पूर्ण प्रदर्शन हेतु एक (IMSBR) डेडीकेटेड फेसेलिटी डिजायन की जा रही है। BARC के पास रिएक्टर प्रौद्योगिकियों, ईंधन पुनर्प्रसंस्रण व अपशिष्ट प्रबंधन, आईसोटोप एप्लीकेशन, विकिरण प्रौद्योगिकियों एवं स्वास्थ्य कृषि तथा पर्यावरण के लिए उनके अप्रयोग, त्वरक एवं लेजर प्रौद्योगिकी इलेक्ट्रॉनिक्स, उपकरण एवं रिएक्टर नियंत्रण एवं सामग्री विज्ञान में अनुसंधान व विकास हेतु सक्रिय समुह है। BARCद्वारा विज्ञान के प्रमुख विषयों पर मूल एवं व्यावहारिक पक्ष पर जोर देने से मूल अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास के मध्य तालमेल स्थापित हो पाया है।

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (नासी), डॉ अजीत कुमार मोहन्ती, (अध्यक्ष बी.ए.आर.सी) एवं प्रो. एस.एम.यूसूफ (अध्यक्ष, भौतिकी समूह) के प्रति, 93वाँ वार्षिक सत्र आयोजित करने के लिए अवसर देने व आमंत्रित करने हेतु आभार प्रकट करती है।

‘इंडिया सिक्योर @ 75’ पर संगोष्ठी

एक राष्ट्र को सुरक्षित करने के लिए हमें अपनी विदेशनीति, विज्ञान, शिक्षाविदों, संस्कृति प्रवर्तक, खिलाड़ियों एवं प्रवासी भारतीयों के माध्यम से राष्ट्र शक्ति प्रदर्शन करने हेतु सक्षम होने की आवश्यकता है। चूंकि भारत वर्ष ने आजादी के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं; अतः इस बात का अवलोकन करने की आवश्यकता है कि हम एक राष्ट्र के रूप में कितने सुरक्षित हैं। आज 2021 में भारतवर्ष 3.17 ट्रिलियन डॉलर जी.डी.पी के साथ छठी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है तथा वर्ष 2022 के अंत तक इसके 5वें स्थान पर आने की संभावना है। किन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका एवं चीन जैसी महाशक्तियों की तुलना में प्रतिस्पर्धी बनने के लिए भारतवर्ष को लम्बी यात्रा तय करनी होगी। इसके लिए देश की अपने समक्ष चुनौतियों पर कार्य करना होगा। भारत विविधताओं का देश है, अतः विभिन्न समस्याओं (चुनौतियों) पर एक विस्तृत चर्चा करने एवं वैज्ञानिक समाधान पर कार्य करने की आवश्यकता है। जैसा कि हमारे पूर्वजों द्वारा सिद्ध किया गया है कि हर मंथन से कुछ अमृत अवश्य निकलता है, हमारे पास सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत गौरवपूर्ण सांस्कृतिक विरासत है, जो 2000 वर्ष से अधिक पुरानी है तथा जिसे विभिन्न धर्मग्रन्थों/पुस्तकों के माध्यम से प्रकाशित/प्रदर्शित किया गया है। वैदिक संस्कृति, 17–19वीं शताब्दी के दौरान देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों जैसे मेघनाद साहा, पी.सी.रे, जे.सी.बोस, एस.एन. बोस सी.वी.रमन, आर्यभट्ट, सुब्रत, रामानुजम द्वारा शोध तथा भारतीय विज्ञान की महत्वपूर्ण प्रगति प्रमुख उपलब्धियाँ हैं।

कोविड एवं प्लेग जैसी महामारी को समाप्त करने में भारतीय वैक्सीनों की कामयाबी, भारतवर्ष द्वारा लागू मिसाइल एवं रॉकेट कार्यक्रमों के सफल मिशन, चंद्रयान 3 के तत्पश्चात् सूर्ययान का सफल प्रक्षेपण, परमाणु ऊर्जा उत्सर्जन योजनाएं एवं नवीकरण ऊर्जा उत्पादन इत्यादि कुछ महान उपलब्धियाँ हैं एवं विज्ञान के क्षेत्र में एक सफल एवं विलक्षण प्रयास है इसके अतिरिक्त टेलीकॉम कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) सूचना प्रौद्योगिकी जैव प्रौद्योगिकी, क्षेत्र में प्रगति, विशेषकर चिकित्सा कृषि, खाद्य सुरक्षा में इसके अनुप्रयोग, सभी हमारे देश (मातृभूमि) द्वारा अर्जित महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं जो कि एक पथ प्रदर्शक के रूप में हमारे देश का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

अतः जब हम आत्मनिर्भरता के उद्देश्य व आदर्श को साथ लेकर ‘आजादी के अमृत महोत्सव’ मना रहे हैं तो अब समय आ गया है जब हम इस अमृत काल के दौरान आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अपनी क्षमता का मूल्यांकन (आंकलन) करें (जैसा कि हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा घोषित किया गया है)। हम

सन् 2047 तक एक विकसित देश के संदर्भ में अपने लक्षित उद्देश्यों एवं उपलब्धियों को विस्तारित करने हेतु आत्मनिरीक्षण करें।

तदनुसार, नासी के अध्यक्ष प्रो. बलराम भार्गव के नेतृत्व में अन्य भूतपूर्व नासी अध्यक्षों जैसे प्रो० मन्जु शर्मा, प्रो० अशोक मिश्रा, प्रो० जे०पी० मित्तल, प्रो० अखिलेश त्यागी, प्रो० अनिल काकोडकर, प्रो० अर्जुन घटक, एवं नासी महासचिव, प्रो० जे.आर० वेल्लारे एवं प्रो. एस.एम यूसुफ (संयोजक) के सहयोग से एक विस्तृत एवं संश्लेषित कार्यक्रम विकसित किया गया है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अर्न्तगत विभिन्न प्रासंगिक विषयों/क्षेत्रों पर आधारित किसी राष्ट्र की सुरक्षा हेतु दो बुनियादी आवश्यकताएँ हैं।

1- लचीली अर्थव्यवस्था एवं 2) ऊर्जा सुरक्षा। इन्हें प्राप्त करने के लिए संसाधनों का सामंजस्यपूर्ण ढंग से उपयोग एवं परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है। संगोष्ठी के दौरान निम्नलिखित विषयों मुद्दों पर चर्चा एवं विचार-विमर्श पर जोर दिया जायेगा।

- 1- कृषि एवं खाद्य सुरक्षा
- 2-सुरक्षा हेतु ड्रग-फार्मेसी व बायो एप्लिकेशन
- 3- वन लनवायु एवं पर्यावरण सुरक्षा
- 4- ऊर्जा सुरक्षा
- 5-इलेक्ट्रानिक्स एवं साइबर सुरक्षा
- 6-अंतरिक्ष सुरक्षा
- 7-चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुरक्षा

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी भारत (नासी)

प्रो. जयेश आर. बेलारे
महासचिव, नासी
प्रो. शेख मोहम्मद युसुफ
संगोष्ठी/सत्र संयोजक

5, लातपतराय रोड़
प्रयागराज-211002, भारत

महोदय/महोदया,

16/09/2023

हमें यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत का 93वां वार्षिक सत्र एवं 'इंडिया सिक्वोर @ 75' पर संगोष्ठी दिनांक 3-5 दिसंबर 2023 का के दौरान, डी.ए.ई कन्वेंशन सेंटर, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बी.ए.आर.सी.), मुम्बई में आयोजित की जायेगी।

अतः आप सभी राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी प्रयागराज एवं भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई की ओर से इन कार्यक्रमों में भाग लेने तथा संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श हेतु सादर आमंत्रित है।

वैज्ञानिक सत्र: वैज्ञानिक सत्र दो खण्डों में आयोजित किए जायेगे-

(क) भौतिक विज्ञान अनुभाग अनुभागीय अध्यक्ष- प्रो जितेन्द्र कुमार बेरा, आईआईटी कानपुर; (ख) जैविक विज्ञान अनुभाग -अनुभागीय अध्यक्ष प्रो. जी.तारू शर्मा एन.आई.ए.बी. हैदराबाद। वैज्ञानिक सत्रों में चयनित शोधकर्ताओं/वैज्ञानिकों द्वारा वैज्ञानिक पेपर शोध पत्र प्रस्तुत किए जाते हैं; जिसके लिए पहले उसका सारांश (एब्सट्रैक्ट) जमा करना होता है इस संबंध में सूचना पहले भेजी जा चुकी है। सभी पत्रों/सारांशों के मूल्यांकन के उपरान्त पत्रों की स्वीकृति एवं प्रस्तुति (पोस्टर के माध्यम से) के बारे में जल्द से जल्द सूचित किया जायेगा। स्वीकृति/अस्वीकृति एवं प्रस्तुति के संबंध में अकादमी का निर्णय अंतिम होगा।

संगोष्ठी:- वार्षिक सत्र के दौरान 'इंडिया सिक्वोर @ 75' पर एक संगोष्ठी आयोजित की जायेगी। शोध पत्रों की प्रस्तुति हेतु शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक आमंत्रित किये जायेगे। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. शेख मोहम्मद युसुफ (अध्यक्ष, भौतिक विज्ञान समूह, बी.ए.आर.सी., मुम्बई) है। इस प्रस्ताव का अनुमोदन प्रो० बलराम भार्गव की अध्यक्षता में नासी काउंसिल, नासी अध्यक्षताओं एवं बी.ए.आर.सी., के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

सभी इच्छुक व्यक्तियों को nasi.barc2023@gmail.com पर पंजीकरण आवेदन करके संगोष्ठी एवं भौतिक एवं जैविक विज्ञान सत्रों में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया जाता है। नासी के अध्यक्षताओं एवं सदस्यों को पंजीकरण शुल्क से मुक्त किया गया है, किन्तु संगोष्ठी में भाग लेने हेतु उन्हें 15 अक्टूबर 2023 तक उपरोक्त ईमेल पर पंजीकरण करवाना होगा तथा आवास हेतु कुछ शुल्क भी देना होगा।

पूर्ण शोधपत्र प्रकाशन:- यदि यह वांछित है कि वार्षिक सत्र में प्रस्तुत शोध पत्र को अकादमी द्वारा (प्रकाशित) पत्रिकाओं प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज इंडिया सेक्शन 'ए' फिजिकल साइंसेज, प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज इंडिया सेक्शन 'बी' बायोलॉजिकल साइंसेज एवं नेशनल एकेडमी साइंसेज लेटर में प्रकाशन हेतु विचार किया जाए तो इसे निर्धारित प्रक्रिया का पालन करते हुए ऑनलाइन जमा किया जाना चाहिए। (संपूर्ण विवरण नासी की वेबसाइट में उपलब्ध है)

सत्र के लिए भेजे गए शोध पत्रों को नासी की पत्रिकाओं में प्रकाशन हेतु विचार नहीं किया जायेगा।

नासी अध्यक्षताओं एवं आम सभा की बैठक:- उपरोक्त बैठकें 93वें वार्षिक सत्र के दौरान आयोजित की जाएंगी इसके लिए सूचना (नोटिस) अध्यक्षताओं/सदस्यों को अलग से भेजी जायेगी।

हम एक बार पुनः आप सभी को, दिनांक 3-5 दिसम्बर 2023 के दौरान भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र मुम्बई में राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के 93वें वार्षिक सत्र एवं 'इंडिया सिक्वोर @ 75' पर आधारित संगोष्ठी में भाग लेने हेतु सादर आमंत्रित करते हैं।

धन्यवाद

भवदीय
प्रो० जयेश आर. बेलारे
महासचिव
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी
प्रयागराज

सम्पर्क नम्बर नासी: 0532 – 2640224; 2441243

ईमेल : nasi.allahabad1@gmail.com; nasi.barc2023@gmail.com

website: <http://www.nasi2023.in>; nasi.org.in

दूसरे सर्कुलर में मेजबान संस्थान भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई द्वारा अक्टूबर 2023 के अन्त तक कार्यक्रम, उहरने की व्यवस्था इत्यादि की विस्तृत जानकारी दी जायेगी।



नासी में गंगा-गैलरी का एक विहंगम दृश्य



बीएआरसी, मुंबई में डीएई कन्वेंशन सेंटर